अंतरा-शब्दशक्ति

एक कहानीकार की रचना प्रक्रिया

व्यंग्य संग्रह

उर्मिला मेहता

एक कहानीकार की रचना प्रक्रिया

(व्यंग्य संग्रह)

उर्मिला मेहता

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-89-6

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१८- उर्मिला मेहता
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Ek kahanikar ki rachna Prakriya by Urmila Mehta

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

वुमन आवाज में 'ऐसे बनाई मैंने अपनी पहचान' के पश्चात् दो और पुस्तकें 'पर्यावरण संरक्षण के परम्परागत तरीके' एवं 'एक कहानीकार की रचना प्रक्रिया' प्रकाशित करवाते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। शिखा जी एवं प्रीति जी की मैं अत्यंत आभारी हूँ जो हिंदी भाषा के महत्व को दर्शाने के लिये अत्यधिक परिश्रम कर रही हैं।

पर्यावरण वाली पुस्तक में मैंने यह बताने की कोशिश की है कि प्रदूषण केवल वायुमंडल में ही नहीं होता है बल्कि हमारे नाक, कान, आँख, जिह्वा तथा त्वचा द्वारा भी ग्रहण किया जाता है। इस प्रदूषण को परम्परा गत तरीके से कैसे दूर किया जा सकता है, उसका विस्तृत वर्णन भी इस पुस्तक में है।

मेरी अन्य पुस्तक इस पुस्तक में अन्य आलेख हैं जो सम सामयिक हैं और समाज में घटित होते रहते हैं। किसी भी लेखक का मन विभिन्न अन्याय अथवा अनुचित क्रिया कलाप को देख, सुनकर उद्वेलित, आक्रोशित हो जाता है।और कलम के माध्यम से कागज पर उतर आता है। और यदि यह भावना प्रकाशित होकर अन्य पाठकों द्वारा भी अपनी सहमति प्रकट करती है तो लिखना सार्थक हो जाता है। प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में,..

उर्मिला मेहता
इन्दौर (म.प्र.)

इस पुस्तक में शामिल आलेख हैं →

एक कहानीकार की रचना प्रक्रिया	5-7
बिन पानी सब सून	8-9
सनातन अस्मिता	10-13
राष्ट्र, सरकार और जनता	14-16
सामजिक कुरीतियाँ और जनचेतना	17-18
मैंने बदल दिया है इरादा	19-24
मकान बना के और शादी रचा के देखो	23-26
चारों धाम घरवाली है!	27-30
पूछो मेरे दिल से	31-32

एक कहानीकार की रचना प्रक्रिया

यूँ तो कई बार मेरी रचनाएँ छपी है और कभी-कभार अपना सा मुँह लेकर लोटी है। परन्तु इस बार तो हद हो गई। परम्परानुसार सम्पादक महोदय ने इस बार यह नहीं लिखा था कि 'अच्छी रचना होने के बावजूद इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। अतः यह सखेद वापस भेजी जा रही है, कृपया रचना भेजते रहें।' सम्पादक द्वारा भेजी टिप्पणी में अपने काम की केवल एक ही बात रहती है कि रचना 'अच्छी' है। इससे अस्वीकृति की कसक-वेदना कुछ कम हो जाती है और तब आवश्यक काट-छाँट और संशोधन के साथ रचना को किसी अन्य समाचार पत्र में खपाने की कोशिश की जाती है।

पर इस बार! इस बार तो कठोर हृदय सम्पादक ने हद कर दी। मेरी अस्वीकृत रचना (कहानी) के साथ जो कागज का पुर्जा नत्थी था, मनो मृत्युदण्ड का फरमान था। बिना किसी लाग-लपेट, संकोच तथा सहानुभूति के उसमे एक ही शब्द लिखा था 'निरर्थक'। जैसे बंदूक की गोली सीधे सीने में आकर लगी। हृदय पर जैसे व्रजपात हो गया, कुठाराघात हो गया, तुषारापात हो गया और क्या कहें आशाओं की खड़ी फसल पर पाला पड़ गया। सभी कहावतों की प्रत्यक्ष अनुभूति एक साथ होने लगी। जैसे कोई शतकवीर पहली गेंद पर ही बोल्ड हो जाए और 'सखेद' अपना भारी भरकम सिर लटकाकर वापस पवेलियन लौट जाए।

सम्पादक द्वारा वापस भेजी कहानी, जो 'निरर्थक ' की मुहर लगवा कर लौटी थी मेरे हाथ में थी और मै सोच रही थी कि इसमें कौन-सी ऐसी कसर बाकि रह गयी थी कि यह उपेक्षित नारी की तरह, सम्पादक स्वामी द्वारा पपरित्यक्ता हो गई।

अपने पूर्ववर्ती कहानीकारों पर मैंने नज़र दौड़ाई। श्री चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी सदा से ही मुझे अनुकरणीय लगे। केवल तीन कहानियाँ लिखकर ही

वे कहानीकार के रूप में अजर-अमर हो गए। 'हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा आए'। अतः मैंने भी मितव्ययी कहानीकार के रूप में उनसे एक कहानी कम लिखकर और प्रसिद्ध होकर उनका रिकॉर्ड तोड़ने का सोचा था। इसी तारतम्य में कहानी लिखी थी और सम्पादक महोदय की और रवाना कर दी थी। उसी कहानी के साथ अस्वीकृति और निरर्थकता की उपयुक्त वारदात हो गई।

अब मैंने दूसरी कहानी लिकना शुरू किया है। कहानी में सजीवता, पैनापन और स्वभाविकता लेन के लिए एक डायरी और पेन सदैव मेरे पास रहते है। यहाँ तक कि सोते समय भी उन्हें सिरहाने ही रहती हूँ। क्या पता कब कोई जोरदार बात दिमाग में आ जाये और बात बन जाए। ओशो ने भी तो यही कहा है कि दिमाग सतत विचार श्रृंखला और संवाद चलते रहते है और श्रेष्ठ संवाद या कथोपकथन कहानी के प्राण होते है, यह बात मैंने 'कहानी के मूल तत्वों ' में पढ़ी है।

कहानी के लिए आवश्यक इंतजाम करने के बाद यह नतीजा सामने आया है कि मेरे जितने भी मानसिक तनाव आदि थे, वे वे सब दिमाग से निकलकर डायरी में अंकित हो गए और मैं अपने आपको हल्का-फुल्का और तरोताजा अनुभव करने करने लगी। चंचल मन की वैचारिकता आँधी थम गई और विचार शून्यता,ध्यान, ओशो आदि से साक्षात्कार होने लगा। अपने मन की बातों के अलावा अड़ोस-पड़ोस, बस, ट्रेन जहाँ भी मुझे एक विशेष बात सुनने, देखने में आती उसे तुरंत नोट कर लेती।

हाँ तो जब मैंने देखा कि अपने स्वयं के और लोगो अनुभव, उनकी राम कहानी उन्ही की जुबानी मेरे पास पर्याप्त मात्रा में एकत्रित गई है तो उन सब वाक्यों को बड़ी तरकीब भिड़ाकर सिलसिलेवार कागज पर उतार दिया। कल्पना का रंग रोगन और विस्तार देकर कुछ पात्रो का सृजन कर डाला। बात का मैंने भरसक प्रयास कि यदि कोई बात किसी रिश्तेदार ने कही तो उसे किसी दूर रिश्तेदार के मुख से निःशब्द करवा दिया। तात्पर्य यह है कि रिश्तेदार द्वारा बोले गए प्रतिकूल वाक्य मित्रो मत्थे माध दिए

और मित्रों की स्नेह भावना रिश्तेदारों के नाम कर दी, ताकि आगे मन मुटाव न हो। वे खास संवाद या कथोपकथन जो किसी भी व्यक्ति द्वारा बोले गए और जिसमे तीव्र आक्रोश, हँसी, व्यंग अथवा साहित्यिकता झलकती थी, उन सबका समावेश मैने ज्यों का त्यों क्र डाला ताकि कहानी में प्रखरता आ सके।

इस तरह सच्ची घटनाओं पर आधारित नितांत यथार्थवादी और मर्मस्थल को छू लेने वाली, भावनाओ से ओत-प्रोत, दूसरी कहानी को भी मैने उसी पेपर में भेजने की हिमाकत क्र डाली जिस पेपर ने पहले कहानी 'निरर्थक ' कह कर लोटी थी। और महान आश्चर्य की बात तो यह है कि भेजने के आठवें दिन रविवारीय पृष्ठ में मेरी कहानी मुस्कुरा रहे थी और मुझे व अपने आप को सार्थक क्र रही थी। मित्रो व रिश्तेदारों मुझे कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया, परन्तु रिश्तेदार जिनके मुख कमल से निकले वाक्यों का प्रयोग मेने अपनी कहानी में, अपनी तई बड़ी चतुराई से किया था, मुझे कनखियों से देख रहे थे और रोष भरे नेत्रों से मुझे डपट रहे थे। मेने चिकने घड़े का रूप धारण क्र लिया था और उनके अग्निबाणो को मुस्कुरा के झेल रही थी।

अब मुझे समझ में आ गया है की सटीक कहानी कैसे लिखी जाती है। यह बात अलग है कि कहानी प्रकाशित होने पर जो प्रतिक्रिया प्राप्त होती है वह प्रशंसा के साथ-साथ अपनी सम्बन्धो पर कुप्रभाव भी डालती है। अतः मेरा इरादा है कि एक बार चंद्रधर शर्मा गुलेरी का रिकॉर्ड तोड़ दूँ (अर्थात दो कहानियाँ प्रकाशित करवा लूँ एवं स्कूल कॉलेज के कोर्स में चलवा दूँ) फिर कहानी लिखने से तौबा कर लूगी।

'भूले बनिया भेड़ खाई, अब खाऊं तो राम दुहाई।'

आखिर मुझे भी तो समाज में रहना है।

बिन पानी सब सून

रहीमदास का यह दोहा कितने वर्षो बाद भी कितना सटीक है अनुभूमि हमे आज में बड़ी गहराई से हो रहे है कि:-

रहिमन पानी राखिये,बिन पानी सब सून।

बिन पानी ऊबरे,मोती मानुस चून।।

भीषण गर्मी और पानी का कम प्रदाय इस वर्ष हम सभी को कुछ ज्यादा हे परेशान कर रहा है। अभी तक हम सबने सुना था कि राजस्थान में महिलाएँ सिर पर गगरी रखकर मीलो पेदल चलकर पानी लती है और वहाँ लोग खटिया पर नहाते है ताकि जल एकत्रित कर कपड़े धोने आदि का कार्य किया जा सके। परन्तु अब तो सुनने में आ रहा है कि मध्यप्रदेश में भी पानी की स्थिति बड़ी करब हो रहे है। कहीं जल प्रदाय दस-दस दिन में हो रहा है तो कहि पानी की चोरी हो रहे है और तो और पानी के टैंकर के साथ सशस्त्र गार्ड तक की व्यवस्था तक करनी पद रहे है। कहीं घर में पोंछा लगाना अपराध घोषित कर दिया है तो कहीं कार्यालय में कूलर बंद रखने के निर्देश दिए गए है। हैंडपम्प का आवश्यकता से अधिक दोहन होने से उन्होंने भी जवाब दे दिया है।

कुल मिलाकर स्थितियाँ गंभीर है। जीवन के पर्याय समझे जाने वाले पानी के लिए खतरा पैदा हो गया है। उपयुक्त सभी घटनाये इसी बात को पुष्ट करती है। ऐसी नाजुक स्थिति में महिलाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है क्योकि वो अधिक समय घर पर रहती है एवं पानी का उपयोग घरेलू कार्यो के लिए करती है। अतः यदि महिलाएँ सोच समझ कर पानी का उपयोग करे जैसे :-

१. वाशिंग मशीन का उपयोग न करते हुए अलग से कपड़े धोने का कार्य करे। मशीन में पानी ज्यादा लगता है। एवं कपड़े के आखिरी साफ पानी को पोछे एवं जूठे बर्तनो में डालने के लिए उपयोग करें।

२. नल में डायरेक्ट मोटर न स्वयं लगाए न किसी और को लगाने दे बल्कि नीचे ही जल एकत्रित कर मोटर द्वारा ऊपर टंकी में चढ़ाए ताकि पानी का सुविधा एवं मितव्ययता से उपयोग हो सके। पानी का उपयोग मिल बाट कर करे। पानी को पानी की तरह न बहाए वर्ण इसे अनमोल वस्तु समझे।

३. इस वर्ष से प्रत्येक नागरिक को वर्षा का जल संग्रहण करना चाहिए। इस मामले में प्रशासन नागरिको की सहायता क्र सकता है कि किस तरह से वर्षा का जल पाइप द्वारा छत से उतारकर खड्डा खोदकर उसमे संग्रहित किया जाता है। ऐसा करने से भू-जल स्तर में बढ़ोतरी होती है।

हम सभी को पानी का भरपूर ध्यान रखना है नहीं तो स्थिति भयावह हो सकती है।

सनातन अस्मिता

भारत की भारतीयता सनातन काल से अपने आप में उल्लेखनीय विशिष्टता समाहित किये हुए है। भारत सदा से ही ज्योति या प्रकाश का पुजारी रहा है, तमसो मां ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतगमय, असतोमा सतगमय -भारतीय संस्कृति के सार तत्व है। सुपरिचित गायत्री मंत्र परम तेजस्वी सूर्य की उपासना का ही मंत्र है।

भारतीय जीवन के विविध आदर्श पौराणिक कल से ही उदाहरण के रूप में हमारे धर्म ग्रंथो, शास्त्रों, वेदपुराणो था श्रीमदभागवत गीता में वर्णित है। आदर्श भ्राता प्रेम, त्याग, वचनबद्धता था अन्याय का प्रतिकार कैसे करना, हमे इन्ही अमूल्य ग्रंथो के माध्यम से ज्ञात होता है। भौतिक उन्नति की दृष्टि से चाहे भारत विकासशील देशो की गिनती में आता हो परन्तु धर्म, आध्यात्म, योगासन, मानसिक शांति और ध्यान आदि के परिप्रेक्ष्य में भारत जगतगुरु की भूमिका निभाता आया है।

एक वकया है कि एक बार एक विदेश जासूस भारत आया। लोगो को धोखा देने के लिए उसने साधु सन्यासी का वेश धारण किया तथा धार्मिक ग्रंथ भी अपने पास रखे ताकि किसी को उस पर शक नहीं हो। धर्म ग्रंथो की आड़ में ट्रांसमीटर रखकर वः हमारे देश की सब गुप्त जानकारी अपने मालिक को भेजता था। परन्तु उकताकर उसने ग्रंथो को समय काटने के हिसाब से पढ़ना आरम्भ क्या। जैसे-जैसे वः अधिक पडताब्य, अपनी जासूसी का काम कम करता गया और एक दिन ट्रांसमीटर पर ही उसने अपने पद से इस्तीफा से दिया था पूरी तरह से हिन्दू धर्म का अनुयायी बन गया। तो ऐसा है हमारा भारतीय दर्शन और चिंतन।

हमारे प्राचीन भारत में मनुष्यता को ही सबसे बड़ा धर्म माना जाता था। 'सियाराम माय सबजग जनी','दया धर्म का मूल है' तथा 'परहित सरिस

धरम नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहि अधमाई' - हमारी भारतीय संस्कृति की मूल है आत्मा है। वसुधैव कुटुंबकम तथा 'सर्वे सुखिन: संतु ' जैसे आदर्श हमारे भारत की सांस्कृतिक विरासत है। अतः धार्मिक पुनजागरण के रूप में इन्ही श्रेष्ठ भावनाओ का प्रचार, प्रसार तथा क्रियान्वयन होना चाहिए। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, दान, त्याग, मधुर वचन, शरणागत रक्षा तथा जिव मात्र पर दया करुणा और परोपकार के श्रेष्ठ गुण हमारी भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ है। जीवन जीने की कला का विकास भी हमारे भारत में हुआ है महर्षि दधीचि का अस्थि दान, श्रीराम का राज्य त्याग, सती सावित्री का चार्म पीटीआई प्रेम तथा श्रवण कुमार की माता-पिता भक्ति और भागीरथी द्वारा पृथ्वी पर गंगा-अवतरण का दृढ़ संकल्प, हमे थी बात दर्शाता है की असम्भव दुनिया में कुछ भी नहीं है।

परन्तु आखिर 'धर्म' का तात्पर्य क्या है ? यदि उसकी सरल-सी संक्षिप्त परिभाषा की जाये तो यही कहेंगे कि धर्म का अर्थ है "यह करना चाह्ये और वः नहीं करना चाहिए "। जैसे सदा सच बोलो, पर पीड़ा से बचो, चोरी मत करो, विभिन्न धार्मिक अवसरों पर पूजा पाठ करो आदि। परन्तु वास्तव में ये सब इतना सीधा-सच्चा नहीं है। विभिन्न रूढ़ियों, परम्पराए तथा रीति-रिवाज इस तरह धर्म के नाम पर प्रचलित हो गए है, जिससे कि जीवन दूभर तथा अशांत होता जा रहा है। परीक्षा के दिनों में लाउडस्पीकर पर जोर-जोर से अखंड पाठ तथा भजन-कीर्तन वास्तविक भक्ति से कोसो दूर तो है ही विद्यार्थियों, वृद्धो एवं बीमारों के लिए बड़े कष्टदायी भी है। अतः इसके सम्बन्ध में गंभीर विचार तथा परिवर्तन की आवश्यकता है, जिससे कि एक मध्य मार्ग निकल सके। मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट करती है - नहि मानुषात श्रेष्ठकर हि किंचित अतः उसे पूर्ण सुखी, शांत, समृद्ध और श्रेष्ठ होने का पूरा-पूरा अधिकार है। अतः धर्म सम्बन्धी विकृतियों का खंडन होना चाहिए।

धर्म आदि के प्रचारक था मार्गदर्शक के रूप में अनेक महापुरुष हुए है जैसे कबीर, तुलसी, रहीम, शंकराचार्य, गौतम बुद्ध, महावीर, स्वामी विवेकानंद आदि। वर्तमान समय के उल्लेखनीय विचारक, दार्शनिक था आचार्य के रूप में सहज ध्यान के श्री पार्थसारथी राजगोपालाचार्य, निर्मला देवी, महर्षि महेश योगी था आचार्य रजनीश का नाम उल्लेखनीय है। कमोवेश सभी ने 'ध्यान ' करने के ऊपर जोर दिया है। धार्मिक आडम्बर को इन्होने महत्व नहीं दिया है। आधुनिक युग के परिप्रेक्षय में शिक्षित और अशांत समाज को सही मार्गदर्शन देने का बीड़ा उपयुक्त महानुभावो ने उठाया है। कोई भी व्यक्ति अपनी रूचि के अनुसार अपना गुरु बनाकर तदनुसार उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

एक अफ़सोस का विषय है कि हमारे प्रचीन गुरु जिन्हे भूत-भविष्य जानने की सिद्धि प्राप्त थी, जान-कल्याण के लिए उसको कभी उजागर नहीं कर सके। अपना महत्व बरकरार रखने के लिए उन्होंने ऐसा किया। जनसाधारण कहि आध्यात्मिक उन्नति न क्र बैठे, इसके लिए उन्होंने लोगो को पाखंड तथा यंत्रवत पूजा पाठ करने के चक्कर में फसा दिया। फलतः ऐसी स्थि पूजा-कर्मकांड से लोगो को शांति तक नसीब नहीं हुई, हाँ भय और स्वार्थ के कारण वज कर्मकांडो के चक्रव्यूह में फस गया।

परन्तु बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि आत्मा में स्थित परमात्मा के प्रकाश यानि ईश्वरीय प्रकाश के दर्शन कर आनंदित होने की तकलीफ, सहज ध्यान वालो ने खोज निकली। ध्यान, योगासन, रेकी, विचारो की शक्ति, स्पर्श शक्ति, साक्षी भाव था होशपूर्वक जीने तथा 'ध्यान' पूर्वक कार्य करने की अमूल्य जानकारी अब हमारे लिए नई नहीं रही। आचार्य रजनीश ने तो ध्यान की एक सो आठ विधिया बताई है। उनके अनुसार मेडिटेशनऔर मेडिसिन एक दूसरे के पर्याय है।

धर्म के दो रूप है। जैसे हर वस्तु के होते है। पहला रूप स्वस्थ है, जो जीवन को स्वीकारता है और जीवन जीने के सरल रास्ते सुझाता है, रूचि पैदा करता है और दूसरा रूप वः है जो अस्वस्थ है, जीवन को अस्वीकार करता है - संसार को असार और माया को ठगिनी कहता है। शरीर को विविध प्रकार से सताने अर्थात बलपूर्वक इच्छाओ को दबाने की शिक्षा देता है। अब यह हमारे ऊपर है कि अमूल्य मानव जीवन का सदुपयोग हम दुनिया छोड़कर करते है या दुनिया में रहकर। खा जाता है कि "मन की अमोघ शक्ति को यदि सर्जनात्मक एवं विधेयात्मक दिशा में लगाया जा सके तो कठिन से कठिन बीमारियों पर भी विजय पाई जा सकती है। शुभ चिंतन एवं लोगो की सदभावना युक्त सम्मिलित ईश प्रार्थना से चमत्कारिक घटना हो जाती है।"

हमारे प्रतिष्ठित आदर्शो में कुछ संयम को आवश्यक माना गया है जैसे जीभ का संयम अर्थात कटु वचन न बोलने व अभक्ष्य न खाने का नियम। दूसरा संयम मन का है। आवारा विचारों को यदि संयमित कर लिया जाये, विचारों को सही दिशा निर्देश दिए जाये तो, कलाकार, साहित्यकार और वैज्ञानिक पैदा हो सकते है।

तीसरा संयम समय का है- अवसरों का लाभ उठाना और व्यर्थ समय नष्ट नहीं करना- यही इसका संकेत है। अर्थ संयम चौथा है, जिसका अर्थ है किफ़ायत से रहें व सदा जीवन उच्च विचार अपनाएँ।

राष्ट्र, सरकार और जनता

अब समय आ गया है कि अनिवार्य रूप से देश का नवनिर्माण, जीर्णोद्धार अथवा विकासशील से विकसित देश बनाया जाये उसे हायटेक बनाया जाये और राजनैतिक पार्टियों द्वारा जाति -पाती, साम्प्रदायिकता, आरक्षण के कुलरिज्म आदि का ढोल पीटना कानून अपराध माना जाए। आजादी के साठ इकसठ वर्ष पूर्ण हो जाने के भी यदि देश के आम नागरिको की मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पा रही है तो बड़ा दुर्भाग्य पूर्ण एवं सोचनीय तथा चिंतनीय विषय है। परन्तु इस विषय के लिए केवल सरकार और प्रशासन को सीधे -सीधे दोष देना न्यायोचित नहीं है। यदि ७५ % दोष सरकार का है तो २५ % दोष नागरिको का भी है। मतदान के प्रति उपेक्षा, अपराध होने पर पैसे का लेन देन के बल पर कानून की अवहेलना तथा शासकीय सम्पति को जब चाहे क्षति देश के लिए घातक एवं आर्थिक स्थिति को कमजोर करने की कारवाही है। देश के हित के लिए यदि प्रशासन अतिक्रमण हटाता है अथवा अन्य कोई कार्यवाही करता है तो लोग सड़को पर उतर आते है और उसका घोर विरोध करते है। शासकीय वाहन, भवन आदि की तोड़फोड़ करना तो जैसे उनका जन्म सिद्ध अधिकार है। ऐसे समय में सरकार को नागरिको के सामने घुटने टेकने की बजाय सख्ती से पेश आना चाहिए। धार्मिक स्थल बनाने के पूर्व सरकार की अनुमति लेना अनिवार्य कर देना चाहिए।

शपथ ग्रहण करते समय हर नेता यह कहता है कि वह देश की जनता को एक समान समझेगा और भय अथवा रागद्वेष के बिना प्रत्येक व्यक्ति के साथ न्याय करेगा। परन्तु अलग - अलग नियम कानून, आरक्षण के चलते क्या सम्भव है ? सर्वप्रथम तो पुराने और अंग्रेजो के जमाने से चले आ रहे संविधान पर गंभीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। तथा प्रत्येक नागरिक के लिए समान नागरिक आचार संहिता लागु करने की जरूरत है। उदाहरण के लिए यदि पति की एक ही पत्नी का सिद्धांत एक के लिए है तो सभी नागरिको

के लिए भी यह होना चाहिये। इससे न केवल नारी उत्पीड़न कम होगा वरन जनसंख्या की विकराल समस्या पर भी अंकुश लगेगा। अपने-अपने घर में अपने-अपने धर्मो का पालन तो वाजिब है पर जिससे देश प्रभावित हो वह काम गैर क़ानूनी माना जाय। कोई भी धर्म देश से ऊपर नहीं है। देश है तो नागरिक है और नागरिक है तो धर्म है।

"भूखे पेट भजन न होय गोपाला" अतः सर्वप्रथम आम जनता के लिए रोटी, कपड़ा, मकान, पानी, बिजली, सड़क, शिक्षा तथा आतंकवाद का खत्म इन मुख्य और मूल मुद्दों पर जल्द से जल्द कार्यवाही करना चाहिये। पुलिस और प्रशासन के ईमानदार तथा कर्तव्य निष्ठ होने साथ ही नागरिको को भी अनुशासित होने तथा कानून का पालन करने की उतनी आवश्यकता है। गलत काम करने पर भरी जुर्माना करना भी अपराध अथवा अनुशासनहीनता को रोकने में कामयाब हो सकता है। यह एक बात और कहना चाहुगी कि जुर्माने जो राशि नियत हो वह व्यक्ति के आर्थिक स्तर को देखते हुए होना चाहिए। जैसे एक मामूली चपरासी और कोई एक अमीर एक ही कानून का उल्ल्घन करता है तो दोनों के लिए ५०० रु जुर्माना करने से आमिर पर कोई असर नहीं पड़ेगा और कई बार रिस्क लेकर कानून तोड़ सकता है अतः आमदनी के हिसाब से कार्यवाही करना चाहिये। जिससे वह दोबारा गलती न करे।

उन्नत देशो में कोई लाल-पीली बत्ती की गाड़ियों का चलन नहीं है अर्थात सब नागरिक समान है केवल कुर्सी पर बैठकर प्रशासन करने तक ही उनका महत्व है वरना उन्हें भी आम आदमी की तरह क्यू में लगना पड़ता है। अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति की बेटी शराब पीकर गाड़ी चला रही थी तो उसे सामान्य नागरिक की गिरफ्तार किया गया था और सजा दी गई थी।

एक बात मुझे बड़ी हास्यास्पद लगती है कि जब एक धरती के पद के लिए न्यूनतम शिक्षा, उम्र रिटायरमेंट का प्रावधान है तो देश को चलाने वाले नेताओ और मंत्रियो को इन सब बातो से अछूता क्यों रखा गया है ? युवा और प्रतिभाशाली नेतृत्व सत्ता में लाने तथा प्रतिभा का पलायन रोकने के लिए इन बिन्दुओ पर गंभीरतापूर्वक विचार करना अब अपरिहार्य हो गया है। यह खुशी की बात है कि कुछ युवा चेहरे इस बार संसद में आए है।

आरक्षण के सम्बन्ध में भी यह सोचा जा सकता है कि गरीब, अशिक्षित और असहाय को आर्थिक मदद दी जाए ताकि वह भी मुख्य धारा से जुड़ सके। आरक्षण के नाम पर प्रतिभा के साथ खिलवाड़ करना कोई बुद्धिमानी नहीं है।

सौ प्रतिशत लोग मतदान में हिस्सा ले सके इसके इसके लिये मतदान की प्रक्रिया को भी सरल बनाना आवश्यक है। इसके लिए चुनाव कार्ड (पासपोर्ट जैसे) और कम्प्यूटर की सहायता ली जा सकती है ताकि व्यक्ति कही भी वोट डाल सके। इससे बूथ केपथरिग, रिश्वत आदि की परम्परा भी स्वतः समाप्त सकती है।

देश की आय बढ़ाने लिए ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थलों का संरक्षण एवं सौन्दर्यीकरण करना जैसा कि समृद्ध देशो किया जाता है एवं उस टैक्स लगाना, वृक्षारोपण को प्राथमिकता, रूफ हार्वेस्टिंग, वृक्षो का प्रत्यारोपण, अच्छी बरसात एवं प्रदूषण मुक्कता के लिये आवश्यक है। साथ ही जल संरक्षण की नई तकनीक एवं स्वछता लिये सस्ती प्लास्टिक की काली थैलियो का उपयोग एवं प्लास्टिक का रिसाइक्लिंग तथा कचरे खाद के रूप में प्रोसेस करना, देश की तरक्की में योगदान कर सकता है। साथ ही नदियों में प्रवाहित की जाने वाली पूजन सामग्री आदि पर रोकथाम करना जरूरी है। प्रत्येक घर की क्यारी में भी यह कार्य किया जा सकता है। नदियों आपस में जोड़ने पर विचार किया जा सकता है। देश में रेल की पटरियों के जाल जैसे यह काम भी सम्भव है।

सामजिक कुरीतियाँ और जनचेतना

मनुष्य एक प्राणी है। व्यक्ति ही समाज का आधार है। दूसरे शब्दो में जो सद्‌गुण, अवगुण, आदत व्यक्ति में होती है, उनका प्रतिबिम्ब समाज में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

प्रत्येक समाज के अपने रीति-रिवाज होते है। भारत में भी विविध रीति-रिवाज अपना अस्तित्व बनाए हुए है। रीति-रिवाज, परम्परा आदि का प्रचलन कब और कैसे आरम्भ हुआ, इनका प्रमाणिक साक्ष्य प्राप्त करना एक दुष्कर कार्य है। फिर भी इतना अनुमान लगाना अनुचित नहीं होगा कि समर्थ व्यक्ति चाहे वह अर्थवान हो, शक्तिवान हो अथवा कोई धर्म गुरु हो, उनके द्वारा बनाए गए नियम आम आदमी के लिए ब्रह्म वाक्य या पत्थर की लकीर होते थे। धीरे-धीरे ये नियम, रीति-रिवाज एवं परम्परा बन गए।

चूकि ये नियम सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा प्रतिपादित किए गए, अतः इनका पालन करना समाज के आम व्यक्तियों के लिए अनिवार्य माना गया। पालन न करने पर सामाजिक बहिष्कार से लेकर श्राप देने और देवी प्रकोप तक की दुहाई दी जाती रही। यहाँ तक कि हुक्कापानी बंद करने और रोटी बेटी के सम्बन्ध की समाप्ति की धमकी भी दी जाती रही।

रीति-रिवाजो का समाज में प्रमुख योगदान रहता है। किन्तु जब जब ये रीति-रिवाज एवं परम्पराएँ सामाजिक उत्थान एवं प्रगति में रोड़े अटकाने लगे, विकृति पैदा करने लगे तब इन्हे कुरीतियाँ कहा जाता है। दुख की बात है कि हमारा समाज में व्याप्त कुरीतियों का जन्म हुआ। पहले पिता, फिर पति और बाद में पुत्र पर आश्रित बनाकर उसकी स्वतंत्र अस्मिता को ही नकार दिया गया। नारी के चरित्र को काँच जैसा नाजुक और पुरुष के चरित्र को इस्पात की तरह परिभाषित किया गया। नारी की कमजोरी के कारण ही बालविवाह, सतीप्रथा था दहेज प्रथा जैसी कुरीतियाँ प्रचलन में आई। यद्यपि राजा मोहन रे जैसे समाज सुधारक ने सतीप्रथा का प्रायः अंत करने में सफलता प्राप्त की है परन्तु बालविवाह एवं दहेज जैसी कुरीतियाँ आज भी देश में विद्यमान है। भारत सरकार ने इन्हे रोकने के लिए अनेक सख्त कानून

बनाए है परन्तु इनसे समस्या का पूर्ण निदान सम्भव नहीं हो पा रहा है। इसका मुख्य कारण पीढ़ियों से चले आ रहे अंध विश्वास एवं मान्यताएँ है।

बाल-विवाह रूपी कुरीति को समाप्त करने के लिए जान जागरण अथवा जनचेतना की आवश्यकता है। इसके लिया अशिक्षितों को, विशेषकर गाँव की जनता को शिक्षित करना परम आवश्यक है। सर्कार के साथ साथ सेवा भावी, सामजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका इस क्षेत्र में बहुत महत्व रखती है।

दूसरी कुप्रथा है दहेज। दहेज के अभिशाप से अमीर व गरीब दोनों ही वर्ग समान रूप से पीड़ित है। दहेज के लिए कन्या को प्रताड़ित करना और फिर उसे जीते जी जलाकर या अन्य किसी विधि से मार डालना, आए दिन देखने, पढ़ने एवं सुनने में आता है। प्राचीन समय में शायद इन्ही कारणों से कन्या जन्म को हिकारत की दृष्टि से देखा जाता था। दहेज की माँग वास्तव में नारी जाती का अपमान है, खासकर ऐसे समय में जबकि वह पुरुष के कंधे से कन्धा मिलाकर प्रगति कर रही है। इस कुप्रथा को समाप्त करने में युवा वर्ग बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके साथ ही दहेज प्रताड़ित महिलाओ को क़ानूनी न्याय मिल सके, इस बात की जिम्मेदारी नहीं युवा वर्ग को समझना चाहिए।

एक अन्य कुरीतिया जो हमारे देश में फल-फूल रही है "जातिवाद"। देश के संविधान एवं कानून की नजर में सब नागरिक एक समान है, आरक्षित-जातियों एवं जन जातियों को छोड़कर। प्राचीन कल में जातिवाद का आधार कर्म व्यवस्था से था जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। किन्तु मध्यकाल के दौरान जाति का आधार "जन्म" को मन जाने लगा। जातियों में से उपजातियो का जन्म हुआ और छोटे-छोटे सम्प्रदायों के रूप में देशवासी विभाजित हो गए। आज हे वर्ग के अनेको वर्ग है। ऊंच-नीच की भावना का बिल बाला है। समाज में विखंडन के साथ ही भाषावाद, प्रांतवाद तथा सम्प्रदायवाद के नासूर, देश को खोखला करने पर तुले हुए है।

मैंने बदल दिया है इरादा

प्रत्येक माता-पिता की तरह हमारी भी इच्छा थी कि हमारा लाडला भी डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए. आदि में से कुछ न कुछ बने।
परन्तु वर्तमान परिस्थिति में जब देश का बच्चा इसी उद्देश्य को प्राप्त करने की फिराक में कमर कस कर, एक पाँव पर खड़ा है, अपनी इच्छा की पूर्ति टेढ़ी खीर ही नज़र आती है। फिर जिन लोगों ने मेहनत, पैसा और समय गँवाकर आसमान के तारे तोड़ भी लिए हैं वे दाल-रोटी खाकर ही प्रभु के गुण गा रहे हैं। महंगाई ने जबरन ही उन्हें सिखा दिया है कि 'जब आवे संतोष धन सब धन धूरि समान'।

होना यह चाहिए कि यथा राजा तथा प्रजा। इस आदर्श को ध्यान में रखकर गहन विचार मंथन कर यह निष्कर्ष निकाला कि यदि बच्चे का कैरियर तन, मन, धन से उज्जवल बनाना है तो उसे राजनीति में प्रवेश करवाना चाहिए। इस क्षेत्र में पढ़ाई-लिखाई, उम्र आदि का कोई खास झमेला नहीं है। गणित और अंग्रेजी का भी आतंक नहीं है। व्यक्ति इज्जतदार है या सजायाफ्ता, इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता। राजनीति वो सूर्य है जिसकी किरणें बिना भेदभाव के सब जड़ और चेतन पर समान रूप से पड़ती हैं। यह वो गंगा है, जो सबको पावन कर देती है, चाहे उसमें नदी आकर मिले या नाला।

संक्षेप में यह कि मैंने अपने कलेजे के टुकड़े को उच्च शिक्षा की दिमाग चाटू, पढ़ाई और रेगिंग की निर्ममता से बचाने का फैसला कर डाला। राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ और संप्रभु बनाने के इरादे से उसे मैंने अखाड़ा, जिमनेशियम और जूडो-कराटे की शिक्षा दिलवाई।

अथक परिश्रम और धैर्य रंग लाया। अब वह तमाम प्रकार की तालीम हासिल कर उस्तादों का उस्ताद हो गया है। गले में रूमाल, मुँह में माणिकचंद और भुजाओं में मछलियाँ दर्शाता हर किसी को धौंस जमाता रहता है। उससे प्रभावित होकर अन्य कई होनहार उसके चेले चपाटी हो गए हैं। वे लोग उसको वैसे ही घेरे रहते हैं, जैसे कृष्ण को ग्वाल बाल घेरे रहते थे। मै भी यशोदा मैया की तरह उसकी छवि पर वारी जाती हूँ। इतना ही नहीं उसको अमूल का मक्खन ब्रेड में लगाकर रोज देती हूँ। फिर भी फ्रिज में से बटर की कमी हो ही जाती है। नॉटी बॉय।

कभी-कभी कोई नासमझ देश-काल और परिस्थिति को न समझकर आपत्ति प्रकट करता है कि बच्चा गलत लाइन पर जा रहा है, संभालो इसको, मैं मुस्करा देती हूँ, हरी झंडी तो मैंने ही बताई है। जब यही माई का लाल होकर हल्लेबाज नेता, मंत्री या दल का अध्यक्ष बनेगा तो लोग कितनी पूछ-परख करेंगे इसका बखान क्या करना?

हाँ, तो चुनाव में खड़े होने की पूर्व तैयारी व्यक्तिगत तौर पर पूर्ण हो चुकी है। बूथ, मतपत्र, मतपेटी से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी आदि का कार्य भी योग्य चेले मुस्तैदी से कर रहे हैं। अब देरी सिर्फ चुनाव की तारीख की है। काफी अकल लगाकर उसने अपना चुनाव चिन्ह 'लाठी और भैंस' रखा है। पार्टी तो उसकी निर्दलीय ही है। घर में भी उसकी भूमिका कभी माँ का पक्ष लेकर बोलने की तो कभी पिताश्री की पैरवी करने की रहती है। जब दोनों की बातें उसे रास नहीं आती तो वह निर्दलीय होकर गरजता है। अपने आठ सूत्री घोषणा पत्र में अपने देश के सभी वर्गो, समस्याओं और सुविधाओं का ध्यान रखा है।

उसके चुनाव का घोषणा-पत्र इस प्रकार हैः-

1.बच्चों के बस्ते तराजू में तोलकर आधे कर दिए जाएंगे।

2.महिलाओं को चौके-चूल्हे से मुक्त करने के लिए सार्वजनिक भोजनालय और चाय-नास्ता घर पर चौबीसों घंटे सुलभता से मुहैया कराए जाएंगे। महिलाएँ चाहें तो समय का उपयोग कर जिस विषय में चाहें, क्लास चलाएँ।

3.अवकाश प्राप्त लोगों को मिठाई और दवाई के फ्री पास दिए जायेंगे।

4.आरक्षित वर्ग के विद्यार्थी को बिना परीक्षा दिए मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि कॉलेजों में प्रवेश दिया जाएगा और नियत अवधि पूर्ण होने पर उन्हें डिग्री दे दी जाएगी।

5.आरक्षणहीन विद्यार्थियों को इस बात के लिए पूरी सहायता दी जाएगी कि वे पता लगाएँ कि बिना इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेज के प्राचीन समय में कैसे पुष्पक विमान बनाया गया था और धनवंतरी कैसे चिकित्सा करते थे, साथ ही प्राकृतिक आहार-विहार से स्वस्थ रहकर डॉक्टरों से दूर रहने की सलाह भी दी जाएगी।

6.आतंकवाद समाप्त करने के लिए आतंकवादियों से बंदूक, पिस्तौल, कट्टा, चाकू आदि ले लिए जाएंगे और बदले में प्रत्येक को एक-एक लाठी दे दी जाएगी, ताकि मुठभेड़ होने पर जान-माल का ज्यादा नुकसान न हो।

7.वर्षों पुराने धार्मिक झगड़े मिटाने के लिए एक ही जगह अर्थात् पास-पास चारों धार्मिक स्थान, मंदिर-मस्जिद, गुरूद्वारा और चर्च बनाए जाएंगे। जैसे देश में सब साथ-साथ रहते हैं वैसे ही सब धर्मों के देवी-देवता भी एकता का परिचय देंगे। लड़ाई-झगड़े का मौका आया भी तो एक ही जगह पर निपट लेंगे।

8.देश में एकता लाने के लिए नागरिकों के सरनेम हटा दिए जाएंगे। विवेकानंद, प्रेमचंद, श्रीकृष्ण, श्रीराम, अकबर, मीराबाई, गुरूनानक आदि के क्या सरनेम है?

अंत में अपने वालों से यही कहना है कि आप भी अपने नौनिहालों के कैरियर के बारे में सोचें। क्या भरोसा पी.ई.टी., पी.एम.टी. आदि की तरह पी.पी.ई. (प्री पॉलिटिक्स एक्साम) और एम.एन (मास्टर ऑफ नेतागिरी) शुरू हो जाएँ और बच्चा असहाय होकर इधर-उधर रड़बड़ाता रहे।
आम नौकरी में तो कभी इनकम टैक्स वाले भी कृतार्थ नहीं करते। उल्लिखित क्षेत्र ऐसा निरापद है कि कुत्ते-बिल्ली के नाम पर भी धन जमा करके करोड़ो के वारे-न्यारे करो और फिर भी सी.बी.आई. का भी कुछ वश नहीं चलेगा।
तो भाईयों और बहनों! अपने लाडले, अपने दुलारे 'भाई बाँके बिहारी पहलवान' को 'लाठी और भैंस' पर मुहर लगाकर बहुमत से जिताएँ और बीन बजाकर सस्वर नारे लगाएँ 'जय भारतमाता की, जय जनता जनार्दन की, और जय बाँके भैया की'।

मकान बना के और शादी रचा के देखो

कहावत है ''मकान बना के देखो और शादी करके देखो।'' तात्पर्य यह है कि दानों ही बातें चुनौतीपूर्ण हैं और जिस जांबाज़ ने दिलेरी से इन दोनों बातों को पूरा करने का बीड़ा उठा लिया, उसने जैसे दुनिया जीत ली। आश्चर्य की बात तो यह है कि आम तौर पर प्रथम सीढ़ी चढ़े बिना ही सीधे दूसरी सीढ़ी पर कदम रख दिए जाते हैं, और छत पर पहुँच कर फिर प्रथम सीढ़ी का ध्यान आता है। द्वितीय सीढ़ी अर्थात् शादी का काम तो भगवत्-कृपा एवं माता-पिता के संयुक्त प्रयास से आनन-फानन में हो जाता है। पंडित, रिश्तेदार और मित्र सब मिलकर बाजे-गाजे से दो अनजान और नादान वर-वधू को संसार-सागर में गोता लगाने के लिए जोर-शोर से धकेल देते हैं। अब दोनों नौसिखियों के ऊपर निर्भर है कि वे तैरना सीख लेते हैं, हिचकोले खाते हैं या डूब जाते हैं।

आरंभ में सभी नए-नवेलों को चार दिन की चाँदनी बड़ी लुभावनी लगती है, पर पाँचवे दिन से तो उनके दिल से बरबस निकल पड़ता है-

''भूल गए राग रंग, भूल गए छकड़ी
तीन चीज याद रही नमक, तेल और लकड़ी''

कुछ और समय बीत जाने पर दम्पति मोहम्मद रफी के मस्ती भरे गाने छोड़ कर मुकेश के दर्दीले गीत गाना और सुनना पसंद करने लगते हैं। जो पत्नी प्रारंभ में चंद्रमुखी दिखाई देती थी, वही समय बीतने पर सूर्यमुखी और ज्वालामुखी का विशेषण प्राप्त करती है। नई-नई गृहस्थी वाले दम्पति इस बात से बखूबी वाकिफ होंगे कि अनुभवहीनता एवं घूमने फिरने तथा होटलिंग करने के शौक के कारण बेचारी तनख्वाह का क्या हश्र होता है। कभी-कभी तो यहाँ तक नौबत आ जाती है कि रद्दी पेपर बेचकर माह के

आखिरी सप्ताह में सब्जी का जुगाड़ जमाया जाता है। इस पर यदि इस आपातकाल में 'अतिथि देव' का पदार्पण हो जाए तो पड़ोसी से उधार माँगने की नौबत आ जाती है और बहाना यह बनाया जाता है कि 'अलमारी के ताले की चाबी गुम गई है' अथवा 'सौ का नोट सब्जी वाला तोड़ता ही नहीं है।' संक्षेप में नए-नए गृहस्थ के लिए पहला हफ़्ता फाकाकशी का होता है।

धीरे-धीरे स्थिति सुधरती है और समय के प्रवाह में बहते हुए दम्पति दूसरों की देखादेखी मकान बनाने का ख्वाब देखने लगते हैं। स्वीट होम, न्यारा बंगला और सपनों के महल की कल्पना उनकी रातों की नींद और दिन का चैन उड़ा देती है।

मकान बनाने का काम यूँ तो पीढ़ी दर पीढ़ी होता आया है, पर जब हमारा इससे वास्ता पड़ा तो इसकी गंभीरता व अहमियत का अहसास हुआ। प्लॉट खरीदने से लेकर मकान बनाने और फिर गृहप्रवेश करने तक कि यात्रा एवरेस्ट पर झंडे गाड़ने से कम मशक्कत वाली नहीं थी। सर्वप्रथम तो घर के नक्शे पर आम राय कना ही बड़ा दुष्कर कार्य था। घर के सभी सदस्य अपना-अपना नक्शा बनाकर उसे सर्वश्रेष्ठ घोषित करते रहे। बमुश्किल गठबंधन सरकार की भाँति सभी की सहमति से एक नक्शा पारित किया गया। सरकारी औपचारिकताएँ पूरी कर एक बड़े काम की सफलता का अनुभव हुआ। इसके बाद भूमि पूजन तो बड़ी सरलता से हो गया, पर नींव खुदने के बाद जैसे-जैसे मकान का काम आगे बढ़ने लगा हमें दाँतों तले पसीना आने लगा। लोहे के चने चबाना, नाकों चने चबाना, टेढ़ी खीर, आसमान के तारे तोड़ना तथा हथेली पर दही जमाना जैसी कहावतें एक के बाद एक याद आने लगीं।

राम-राम करके मकान पूर्णता की ओर अग्रसर होने लगा। आरम्भ में मकान का ढाँचा खड़ा होने तक हमें कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था, जैसे शिशु के प्रारंभिक काल में भ्रूण का आकार प्रकार समूचा स्पष्ट नहीं होता है।

हमारे ठेकेदार साहब कहते थे कि आपका घर सिंपल और खूबसूरत बनेगा, पर हमें लगता था, कि वह केवल सिंपल ही बनेगा। परन्तु रंग रोगन आदि होने के बाद तो हमारा मकान शुक्ल पक्ष की सोलह कलाओं वाले पूर्ण चन्द्र की भाँति चमकने लगा।

मकान बनाने के बाद वास्तुशांति की प्रक्रिया ने तो हमें जैसे आत्मिक रूप से शांत ही कर दिया। अचानक दो तरह की बातें याद आने लगी ''न घर तेरा न घर मेरा, मंदिर है भगवान का'' तथा ''गालिब के दिल में जो रहने की तमन्ना है उनकी, तो वे अलग मकान क्यों बना रहे हैं? मकान बनाने के चक्कर में हमारे श्रीमानजी के सि के बाल भी किंचित मात्रा में उड़ गए। मानों दर्शा रहे हों कि 'खल्वाटो क्वाचिंत् निर्धनं।'

मकान मालिक होना भी धनवान व्यक्ति की ही निशानी है। सहसा जितने मकान मालिक हैं उनसे हमारी हमदर्दी उमड़ पड़ी। श्रद्धा से मस्तक झुक गया तथा साष्टांग दंडवत करने की इच्छा जाग्रत हो गई। बड़ी बिल्डिंग वालों के प्रति प्रशंसापूर्ण आदर एवं छोटे मकान मालिकों के प्रति सहानुभूति की भावना हिलोरे लेने लगी।

मकान बनाने के आखिरी दौर में जब 'फिनिशिंग टच' दिया जाता है तो लगता है अपने भी फिनिश हो गए हैं। लुभावने नल, आकर्षक पेंट तथा नए डिजाइन के वार्डरोब जैसे व्यंग्य से मुँह चिढ़ाते हैं - बच्चू और बनाओं मकान। किसी अंग्रेजी विद्वान ने सही कहा है 'मूर्ख मकान बनाते हैं और बुद्धिमान उसमें रहते हैं।'

मकान बनाने के बाद गृह-प्रवेश या वास्तु-शांति समारोह काम की पूर्णता का प्रमाण-पत्र है। रिश्तेदार एवं मित्र लोग इस अवसर पर गिफ्ट देकर मानों सहानुभूतिवश सिर पर हाथ फेरते हैं और कहते हैं तुमने इतना खर्च किया है, कहीं भविष्य में तुम्हें कड़की का सामना नहीं करना पड़े तथा

पहनने-ओढ़ने के वादे नहीं पड़ें और डिनर, टेंट हाउस आदि के पेमेंट में दिक्कत नहीं आए, इसलिए यह सहायता राशि दी जा रही है।

मकान अच्छा बनने के बाद उसको कहीं नज़र न लग जाए इस बात की चिंता सताने लगती है। इस मामले में भी कई राय साहब सामने आए। ताबड़तोड़ हमें मशविरे मिलने लगे। एक हितैषी ने काली मटकी उल्टी टाँगने की राय दी तो दूसरे हितैषी ने पुराना जूता टाँगने का सुझाव दिया। तीसरे सलाहकार ने टूटा मुड्डा मकान पर रखकर नज़रबद्दूर करने की राय दी। सुदर घर पर ऐसी बदसूरत चीजें टाँगने के ख्याल से ही हमें कँपकँपी हो आयी। हमने चुपचाप अपने प्यारे घर का स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखा और उसे आश्वस्त किया कि ऐसी कोइ् भी नागवार हरकत हम नहीं होने देंगे। पर नज़र का सवाल अपनी जगह पर अभी भी मौजूद था। अचानक हमारे छोटे बेटे ने एक नायाब तरीका बताया जिससे वांछित आवश्यकता की पूर्ति हो सकती थी। उसने सुझाव दिया कि एक सुंदर-सा बोर्ड बनाकर खूबसूरत अक्षरों में यह लिख दिया जाय कि 'बुरी नज़र वाले तेरा मुँह काला' और इस बोर्ड को घर पर टाँग दिया जाय।

यहाँ का सफर करने के बाद अब मकान के लिए किरायेदार रखने की बात चल रही है। सुझाव मिलने लगे हैं कि स्टाम्प लगाकर लिखा-पढ़ी कर ली जाय ताकि किरायेदार बाद में हमें तंग न करें, पर हमारे प्रिय देवर का कहना कुछ और ही है। उनका कहना है कि लिखा-पढ़ी से कुछ नहीं होता है। आप तो किरायेदार को कह दीजिए कि हम कागज पर विश्वास नहीं करते हैं तथा जिस दिन हमें मकान की जरूरत होगी, हम खुद आपसे खाली करवा लेंगे। रहने को तो हम अपने निजी घर से दूर रहते हैं पर हमारे पाँव पूरे शहर में फैले हैं अर्थात् ,.... समझ गए न आप?

चारों धाम घरवाली है!

आपने वह फिल्मी गीत तो अवश्य सुना होगा जिसमें सास, ससुर, साला और साली प्रत्येक को एक-एक तीर्थ, और घरवाली को चारों धाम अर्थात् 'फोर इन वन' की संज्ञा दी है। मुझे लगता है कि गीतकार ने अपने अथवा अपने जैसे अन्य अल्प संख्यक पतियों के अनुभव से प्रेरित होकर अपने जीवन की रागिनी छेड़ दी हे। वर्ना वह अबला नारी जो पति परमेश्वर की पुजारिन, उसकेचरणों की दासी, उसके रहमों करम पर आश्रित है, भला चारों धाम कैसे हो सकती है!

खैर, यह प्रसन्नता की बात है कि कुछ खुशनसीब पत्नियाँ अभी हैं जो न केवल चारों धाम हैं वरन् चारों वेद, अठारहों पुराण, समस्त शास्त्र, गीता, महाभारत और साक्षात् रामायण का अवतार हैं। ऐसी पत्नियाँ न केवल अपने घर में बल्कि ससुराल और पीहर में भी एक छत्र राजय करती हैं। उनके श्रीमुख से निकले वचन ब्रह्म वाक्य होते हैं। घर का प्रत्येक सदस्य चाहे वह बड़ा हो या छोटा, बिना चूँ-चपड के उनकी आज्ञा का पालन बड़ी मुस्तैदी से और न चाहते हुए भी खुशी-खुशी करता व करवाता है। अक्सर ऐसी पत्नियों के पति गुनगुनाते रहते हैं कि 'जो तुमको हो पसंद वही बात कहेंगे, तुम दिन को अगर रात कहो, रात कहेंगे।

चारों धाम घरवाली के स्वामी त्रिभुवन नाथ होते हैं अर्थात् चाहे घर हो चाहे समाज, या कोई भी क्षेत्र उनकी घरवाली की तूती सब ओर बोलती है। इस जगत में ऐसी घरवाली के पति 'जोरू के गुलाम' विशेषण से विभूषित होते हैं (कानाफूसी में) परन्तु वे लोगों की कतई परवाह नहीं करते हैं। दुनियादारी के मामले में वे बड़े प्रैक्टिकल होते हैं। वे जानते हैं कि उनकी गृहस्थी की धुरी, घरवाली ही है। घरवाली खुश, तो परिवार खुश। मुगेंबो

खुश हुआ कि तर्ज पर वे पत्नी रूपी मुगेंबो को खुश रखने की कोशिश अनवरत् करते रहते हैं। विपरीत स्थितियों में भी वे घरवाली से पंगा नही लेते। 'यत्रनार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता' इस उक्ति का वे आवश्यकता से ज्यादा अक्षरशः पालन करते हैं। वे पतिदेव या पति परमेश्वर होने की अपेक्षा घरवाली को 'पत्नीदेवी' मानने में ज्यादा विश्वास करते हैं। उनका अटल सिद्धांत है कि जब वक्त पड़ने पर गधे को भी,..... बनाना पड़ता है तो घरवाली तो बकायदा सात फेरों वाली अर्द्धांगिनी, घर की केन्द्र बिंदु तथा उसके बच्चों की जननी है। उससे कैसा परायापन? शंकर भगवान ने तो पार्वती को अपने आधे शरीर में स्थान देकर धर्मपत्नी के रूप को असीमित महत्व दिया है। अर्द्धनारीश्वर कहलाने में उन्हें नतिक भी संकोच नहीं हुआ, तो इसका तात्पर्य क्या निकला? यही है कि जितने भी अकड़बाज पति हैं, अपनी हेकड़ी छोड़कर देवों के देव महादेव के इस आदेश का पालन सख्ती से करें कि अपनी-अपनी घरवालियों को पूरा-पूरा सम्मान दें, स्नेहपूर्ण व्यवहार करें, वर्ना, उनका तीसरा नेत्र खुल जाएगा और घर में घरवाली द्वारा तांडव नृत्य आरंभ हो जाएगा।

श्री गणेश जैसा श्रेष्ठ सपूत जो तीनों लोकों में प्रथम पूजनी है, शंकर-पार्वती जैसे प्रसन्न दंपति को ही प्राप्त होता है। परन्तु अधिकांशतया देखने मे आता है कि जब तक पत्नी प्रेयसी या मंगेतर रहती है, उसमें गुणों की खान एवं रूप का सागर नज़र आता है परन्तु एक बा रवह सात फेरों के फेर में पड़ी कि सात जन्मों तक पति महोदय के तेवर सातवें आसमान में रहते हैं।

खैर, जो भी हो यहाँ बात चारों धाम घरवाली की है। तो ऐसी स्वयं सिद्धाओं की इमेंज कुछ निराली ही होती है। जब वे सभा सोसाइटी अथवा नाते-रिश्तेदारी में जाती हैं तो उनके पति एवं बच्चे उनकी आवाज बनकर बोलते हैं। उनके हिंट, भावना, विचार को सर्तक होकर इंप्लिमेंट करते हैं। चाहे वह गलत ही क्यों न हो। परन्तु महान आश्चर्य की बात तो यह है कि

जब ऐसी घरवालियों के लड़कों की शादी होती है तो वे चारों धाम घरवाली को मनाने के बजाय मातृदेवी भव-पितृदेवो भव वाली विचारधारा को अपनाते हैं। महज इसका कारण अपनी माता का वर्चस्व या आतंक है या पिता की रबर स्टाम्प वाली छवि, यह एक शोध का विषय है।

कहा जाता है कि पुरूष की सफलता के पीछे नारी का हाथ होता है। अहंकारी पति चाहे इसे स्वीकार न करें, पर यह वास्तविकता है। इस बात की पुष्टि बिना नारी वाले पुरूष ही कर सकते हैं। ऐसे विवेकानंद बहुत न्यून हैं जो केवल अपने दम पर सफलता के उच्च शिखर पर पहुँचते हैं। त्रिदेवों सहित सभी ऋषिमुनियों के विवाहित होने की बात से घरवाली की महत्ता स्वतः सिद्ध है। नहीं तो विवाह की इतनी बड़ी रिस्क कोई नहीं उठाता।
मेरे कहने का तात्पर्य केवल इतना भर है कि घरवाली को चाहे चारों धाम के रूप में न भी माना जाए पर एक तीर्थ, एक शांत उपवन तो समझा ही जा सकता है जहाँ मानसिक शाति और प्रसन्नता की निर्झरणी बारहों मास प्रवाहित होती रहती है। शर्त केवल इतनी है कि उसकी उचित पूछ-परख और सम्मान किया जाए तथा स्नेह, सहानुभूति का बर्ताव किया जाए। फिर देखिए परेशानियों से घिरे होने पर भी वह काँटों से आच्छादित गुलाब की तरह सदैव प्रसन्नता बिखरेगी।

पूछो मेरे दिल से

जैसे-जैसे घड़ी का काँटा आगे बढ़ता है और बाई के आने की संभावना कम होती जाती है, कलेजा जैसे मुँह को आने लगता है। चाय की प्याली में तूफान आ जाता है और बना बनाया मूड खराब हो जाता है। हाथ पाँव बड़ी तीव्र गति से यहाँ-वहाँ सक्रिय हो जाते हैं। कामकाज को लेकर वाद-विवाद शुरू हो जाता है। हाथ-पाँव के साथ-साथ जीभ भी चलने लगती है। गृहिणी की दशा बाई के बिना वैसी ही हो जाती है जैसे शस्त्र के बिना सैनिक की होती है। पूरा घर तनावग्रस्त हो जाता है। दूसरी बाई रखने का प्रस्ताव उठने लगता है। परन्तु संसद में रखे पूर्ण बहुमत वाले पक्ष के अविश्वास प्रस्ताव की तरह गिर भी जाता है। क्योंकि दूसरी बाई की विश्वसनीयता की भी कोई गारंटी नहीं रहती। अतः मन मसोस कर कार्यकारी बाई से ही काम चलाना पड़ता है, धकाना पड़ता है।

राम-राम करके बिना बाई के दिन निकालना पड़ता है। लगता है काम की चकरी में कोल्हू के बैल ही बन बए हों। यत्र-तत्र सर्वत्र घर की अव्यवस्था बाई की अनुपस्थिति घोषित करती है, और अगर ऐसे में मेहमान घर पर आ जाएँ तो ''सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना'' समझ में आ जाता है। यदि बाई की शिकायत की जाए तो मेहमान अपनी बाई की रामायण बताने लग जाता है कि बाईयों का कहर तो सब जगह है।

नागा करने के बाद जब बाई स्वदेश लौटती है तो उसके प्रति जितने भी गिल-शिकवे होते हैं सब हल्की-फुल्की ताकीद के बाद समाप्त हो जाते हैं। उसका स्वागत मन में बड़ी गर्मजोशी से किया जाता है। उसके पायल की आवाज सुनकर मन मयूर नाच उठता है और दिल की कोयल गा उठती है कि 'पायल छनकाती तुम आ जाओं मेरे घर में।' बाई चाहे कैसी भी हो काली, गोरी, खूबसूरत, बदसूरत उसको देखकर गृहस्वामिनियों को वैसी ही सुखानुभूति होती है जैसी कि मेनका को देखकर विश्वमित्र को हुई थी।

बाई, बाई के अलावा कुछ भी नहीं है, परन्तु महिलाएँ जानती हैं कि वह उनकी कितनी घनिष्ठ सखी है, कितनी आत्मीय स्वजन एवं सुख और

आराम की केन्द्र बिन्दु है। परन्तु बड़ा दुःख का विषय है कि वर्तमान समय में अच्छी और रेग्यूलर बाई की वैसी ही शॉर्टेज है जैसी ि कइस मुए कलयुग में आदर्श बहू और आदर्श सास का मिलना। यदि भूल चूक या पिछले जन्मों के पुण्य प्रताप से अच्छी बाई मिल भी जाती है तो गृहिणी कानों-कान अपनी पड़ोसन को उसकी खबर नहीं होने देती। अपनी अच्छी बाई को दूसरे के घर लगाने की गलती तो वे कभी नहीं करती। यदि कोई गृहिणी पड़ोसन से बात करते हुए अपनी बाई को देख लेती है, तो वो किसी बहाने से उसे बुलवा लेती है और पड़ोसन की बुराई करके आइंदा से बात न करने की हिदायत दे देती है।

परन्तु बाइयाँ भी कुछ कम खुदा नहीं होती हैं। अपना महत्व वे खूब समझती हैं। एडवांस और कपड़े आदि लेकर वे मालकिन को ब्लेकमेल करती रहती हैं। किसी भी घर का अलॉटमेंट उसमें रहने वाले व्यक्ति को चाहे बाद में हो, पर बाइयों को पट्टे इन घरों में पहले से ही लिखे होते हैं। एक घर का मालिक का ट्रांसफर होने पर उसी घर में दूसरे मालिक के आने पर बाई का अधिकार ऑटोमेटिक हो जाता है।

बाइयों की विशेषता होती है कि कितनी भी छुट्टी वे कर दें, पर उसका पैसा वे बिल्कुल काटने नहीं देती। यदि कोई गृहिणी स्मार्ट बन के छुट्टी का हिसाब रखे तो वह छः दिन के ''छः टैम'' गिनाने में माहिर रहती है। वह डाल-डाल और पात-पात वाली शैली में गृहिणी को नाकों चने चबवा देती है। यदि कोई गृहिणी दूसरी बाई को बुलाना चाहे तो उस बाई से वह ऐसी गाली गुप्ता करेगी कि दूसरी बाई वहाँ आने की हिमाकत नहीं कर सकती। जैसे एक म्यान में दो तलवार नही रह सकतीं, एक इलाके में दो डाकू सरदार नहीं होते तथा प्रत्येक गली का कुत्ता अपनी गली में शेर होता है। वैसे ही एक बाई दूसरी बाई को अपने एरिया में नहीं घुसने देती है। चुनाव क्षेत्र की तरह सब बाइयों के क्षेत्र भी बँटे हुए है।

जब से वाशिंग मशीन, डिशवाशर, रोटी मेकर और एशियन स्काय शॉप का 2000 रूपये का झाड़ू आया है तब से बाइयाँ सौतिया शाह से जली-भुनी जा रही है। परन्तु हमने तो ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ सब सोच कर यही

निश्चय किया है कि अपने को 200-300 रूपये की बाई ही पुराती है। इस तरह से किसी जरूरतमंद की सहायता भी हो जाती है और अपना काम भी हो जाता है। उपवास के समय उसको दूध या शरबत, समय-समय पर साड़ी या बर्तन भी दे देते हैं, पर नतीजा वही ढाक के तीन पात। छुट्टी करने की उसकी जन्म-जन्मांतर की आदत जाती नहीं है। पूछो तो सदाबहार कारण हाजिर कर देती है जैसे मैयत में गई थी, तो बच्चा बीमार पड़ गया था, तो घर में ''टेन्शन'' हो गया था आदि। शादी के मौसम में डबल कमाई की दृष्टि से बाई पूरी बेलने भी चली जाती है। अब घरेलू काम के पापड़ बेलने का काम मालकिन के सिर पर आ पड़ता है। विदेश में एक बात अच्छी है कि वहाँ महिलाओं को घरेलू काम उस रूप में नहीं करने पड़ते हैं जैसे यहाँ करने पड़ते हैं। सब काम मशीनों से होता है। मेहमान के आने पर मेहमान भी अपनी प्लेट धोकर जाते हैं। अब अतिथि मेहमान नहीं बल्कि बाई होती है जो कभी भी बिना पूर्व सूचना के छुट्टी कर देती है।

अंग्रेजी ज्ञान भी आजकल की बाइयों का बढ़ रहा है। जैस अगर कहो कि कल जल्दी आना तो हाथ नचाते हुऐ वे कहेंगी ओ.के., ओ. के.। फिर स्वयं ही बताएँगी कि वे साहब की नकल कर रही हैं। 'कन्टीन्यूस काम' घर में 'टेन्शन' और 'टूशन' जैसे शब्द वे बखूबी वापरती हैं। तात्पर्य यह कि बाई के बिना जीवन यापन बड़ा कठिन है। वही इष्टमित्र, वही बंधु-बांधव और वही सब कुछ है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - उर्मिला मेहता

जन्म - 28 अप्रैल 1949, रतलाम (म.प्र.)

शिक्षा - एम.ए. हिन्दी (1971) अंग्रेजी साहित्य, बी.ए.

पता - ए.-2, फ्लेट नं. 602, अवासा ए.बी. रोड़
बीजलपुर, इन्दौर (म.प्र.)

मो. - 9981312686

ई मेल - mehta.urmila2012@gmail.com

कार्यक्षेत्र - अध्यापन - 1. नागपुर वि.वि. द्वारा संचालित 'इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल वर्क' नागपुर में स्नातक कक्षाओं तक का हिन्दी अध्यापन। 2. स्कालर्स होम भोपाल 3. श्री गुरु तेग बहादुर पब्लिक स्कूल रतलाम में भी हिन्दी तथा संस्कृत का अध्यापन।

खेलकुद - 1. सागर युनिवर्सिटी की युनिवर्सिटी चैंपियन- टेबल टेनिस। 2. ऑल इंडिया नार्थ जोन कानपुर में टेबल टेनिस में क्वार्टर फायनल तक पहुँचने का गौरव। 3. स्कूल व कॉलेज में बेडमिंटन, हाय जम्प, लॉग जम्प, रेस, भाला फेंक, गोला फेंक, कैरम आदि के विजेता होने के प्रमाण पत्र एवं कप्स। 4. रोटरी क्लब में विजेता व उपविजेता के स्मृति चिन्ह।

प्रकाशन - लेखन - विद्यार्थी जीवन से साहित्य लेखन में सक्रिय । महाविद्यालयीन पत्रिकाओं तथा स्थानीय समाचार पत्रों में लेखन के पश्चात् नई दुनिया के 'अधबीच' 'खुलाखाता' एवं दैनिक भास्कर के 'राग दरबारी' स्तंभ में व्यंग रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी भोपाल तथा इंदौर से अनेक वार्ताएँ एवं काव्य प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तके - 1. उर्मिला (खण्ड काव्य) 2. ऐसा आपको कब से है? (व्यंग्य संग्रह) 3. भावांजलि (काव्य संग्रह) 4. ऐसे बनाई मैने अपनी पहचान

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-88102-89-6
मूल्य- 55/-